Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 68, December 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020

मालवी लोक जीवन में राम की प्रासंगिकता

–डॉ. अर्जुन सिंह पंवार
पूर्व शोधार्थी, शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम।
पता– ग्राम–चौराना, पोस्ट–नौगांवा कलां, तहसील एवं जिला–रतलाम, मप्र–457001
मोबाईल– 9977220258, ईमेल– arjunsir81@gmail.com

भारतीय संस्कृति के लोकनायक है राम। इन्होंने समाज की मान–मर्यादा को नवीन आयाम प्रदान किया है। वे लोक जीवन के आदर्श हैं। उन्होंने जीवन के अनुभवों को स्वयं भोगा। इसी कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते हैं। 'राम से बड़ा राम का नाम' की हमारे यहां परंपरा रही है, जो आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। इसीलिए हमारे यहां आज भी बच्चों के नाम राम पर ही रखे जाते हैं। यहां तक की बालिकाओं के नाम भी राम से जोड़ते हुए रखना भाग्य का प्रतीक माना जाता है– रामकन्या, राम बाई, रामू बाई, रामकली इत्यादि। इसी तरह बालकों को आते देख कहा जाता है कि 'देखो, राम–लखन की जोड़ी चली आ रही है।' मान्यता है कि राम स्मरण मात्र से ही मनुष्य की मुक्ति मिल जाए। हमारे यहां हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी संतान राम के समान मर्यादित और आज्ञाकारी हो, वहीं हर नारी चाहती है कि उनको राम जैसा एकनिष्ठ, पत्नीव्रतधारी पति मिले।

मालवा के लोक जीवन में भी राम के जीवन चरित का गहन प्रभाव देखा जा सकता है। सामाजिक जीवन में 'राम का नाम' मौन को तोड़ने वाला और वैमनस्य, मनमुटाव को दूर करने वाला नाम है। यहां के लोक जीवन में अभिवादन भी राम के नाम से होता है। 'जै रामजी, जै रघुनाथ, राम–राम–सा से एक–दूसरे से अभिवादन के बहाने राम को स्मरण कर लिया करते हैं। ताकि राम की भक्ति की जा सके और मोक्ष मिल सके।

मालवी बोली में संवाद और विचारों के आदान–प्रदान में भी राम के नाम की महिमा देखी जाती है। मालवी लोक जीवन की कुछ कहावतें–लोकोक्तियां इस प्रकार हैं–

'जहां गाम (गांव) है, वहां राम है।'

इसके दो आशय है। पहला, मालवा के गांवों में राम मंदिर है। दूसरा, जहां गांव है वहां सत्यता का वास है और सत्य की राम है।

'के राम वंचाड़े, के डाम वंचाड़े।'

अर्थात् बीमार व्यक्ति या तो राम के नाम से बच पाता है या डाम(गर्म लौहे/मिट्टी के टूकड़े से दागना) से बचा जा सकता है।

'राम थारी माया, कठे धूप ने कठे छाया।'

अर्थात् सुख–दुख राम के हाथों में है। वही संपूर्ण संसार का संचालनकर्ता है।

'रामजी री चिड़िया, रामजी रो खेत। खाजे वो चिड़िया, भर–भर पेट।'

अर्थात् मानव रूपी चिड़िया खेत रूपी संसार में समान रूप से जीवन निर्वाह करने के अधिकारी है। उन्होंने किसी के साथ भी भेदभाव नहीं किया है।

'राम राखे तो, कोई नी चाखे।'

अर्थात् जिसका रखवाला राम होता है, उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।

'पामणा भेरे पोई, राम करे जो सोई।'

अर्थात् बिन बुलाए मेहमानों की संख्या में वृद्धि होने पर प्रंबंधन का राम ही रखवाला होता है।

'रामजी री मौज।'

अर्थात् राम के रहते जीवन में सुख ही सुख है।

'मुंडा में राम तो, वईग्या चार धाम।'

अर्थात् राम के स्मरण मात्र से चार धाम का पुण्य है।

मालवा में जब भोज दिया जाता है तब कई घरों में नमक को रामरस कहा जाता है। यहां ऐसी मान्यता है कि जिस प्रकार भोजन में नमक अनिवार्य है, बिना नमक के भोजन स्वादहीन होता है। उसी प्रकार बिना राम नाम स्मरण के यह जीवन रसहीन है।

परंपराओं में भी राम की भूमिका परिलक्षित होती है। गांवों में आज भी शुभ लग्न विवाह के पहले राम मंदिर में रखे जाते हैं। विवाह की तैयारी में पहले वागा(कपड़े) रामजी की प्रतिमा को पहनाए जाते हैं। बारात से पहले दूल्हा रामजी के दर्शन करता है। उसके पश्चात विवाह संपन्न होने के बाद मंदिर जाकर नव दंपत्ति रामजी का आशीर्वाद लेते हैं। ताकि उनका भावी जीवन सुखपूर्वक बीत रहे।

ऐसी मान्यता है कि अंतिम संस्कार में अर्थी ले जाते समय रास्तेभर 'राम नाम सत्य है' का उच्चारण करना मृत व्यक्ति के मोक्ष प्रदान करता है।

मालवा के भजनों और गीतों में भी राम की महिमा का बखान कुछ इस प्रकार हैं–

'म्हने थोड़ी–थोड़ी भगति करवा दो,

राम थारा मंदरिये चढ़वा दो।

महला झकोरा म्हने जमे कोनी,

म्हने टूटी–फूटी झोंपड़ी में रेवा दो।

राम थारा मंदरिये चढ़वा दो.....।

लड्डू पेड़ा तो म्हने भावे कोनी,

म्हने हुकी–पाकी रोटी खावा दो।

राम थारा मंदरिये चढ़वा दो.....।

होना–चांदी मु पेरु कोनी,

म्हने चंदन री मारा फेरवा दो।

राम थारा मंदरिये चढ़वा दो.....।

कंकु री टिली मु नी लगाडु,

म्हने चंदन री टिकी लगाड़वा दो।

राम थारा मंदरिये चढ़वा दो.....।

गादी गलिचा पे मु बैठू कोनी,

म्हने फाटी–टूटी गोदड़ी पे सोवा दो।

राम थारा मंदरिये चढ़वा दो.....।

इस गीत में कहा गया है कि मुझे अपने जीवन में आपकी(राम) की भक्ति करने दो। मुझे तुम्हारी शरण में ले लो। मुझे महल और उसके झरोखें अच्छे नहीं लगते, मुझे टूटी–फूटी झोपड़ी में रहकर आपका नाम जपना है। मुझे पकवानों की जरूरत नहीं है, मुझे तो केवल सुखी रोटी ही चाहिए। मुझे सजना संवरना भी पसंद नहीं है, मुझे तो बस आपके नाम की चंदन की टिकी लगाना है। हे राम, मुझे आपकी शरण में ले लो। मुझे मखमली गद्दी भी नहीं चाहिए, मुझे फटा–पुराना बिस्तर ही सुहाता है। हे राम, मुझे आपकी शरण में ले लो।

इसी तरह एक और गीत में राम के भजन–सुमिरन की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है–

लीली–पीरी कपिला गाय

भजो म्हारा रामजी रो नाम

रामजी रो नाम, म्हने सदा विसराम

सिस दि दो तो थोड़ो नमन कर लो

नि तो मगरा रो भाठो जाण

आंख दि दी तो दर्शन कर लो

नि तो लिंबू री फाड़ जाण

भजो म्हारा रामजी रो नाम....।

कान दि दा तो राम नाम सुण लो

नि तो मिट्टू रो दर जाण

मुंडो दि दो तो राम नाम भज लो

नि तो उंदरा रो दर जाण

भजो म्हरा रामजी रो नाम....।

हात दि दा तो धरम वखाणो

नि तो चंपा री डार जाण

पेट दि दो तो वरत कर लो

नि तो अन री कोठी जाण

पग दि दा तो तीरत कर लो

नि तो देवरा रा खंब जाण

भजो म्हारा रामजी रो नाम...।

गीत के माध्यम से प्रभु श्रीराम से भक्ति करने की महिमा का वर्णन किया गया है और कहा गया है कि ये जो रंग–बिरंगा मनुष्य जीवन मिला है तो रामजी का नाम स्मरण कर लो। रामजी का नाम लेने से मुझे सदा ही शांति और विश्राम मिला है। यह जो सिर मिला है तो थोड़ा उनको भी नमन कर लो। नहीं तो किसी पहाड़ी का पत्थर समझो। आंखें दी है तो प्रभु के दर्शन कर लो, नहीं तो नींबू के टूकड़े समझो। मेरे प्रभु श्रीराम का नाम भज लो। कान दिए है तो राम का नाम सुन लो, नहीं तो इन्हें तो मिट्टू का घोंसला समझ। मुंह दिया है तो राम का नाम जप लो, नहीं तो चूहे का बिल समझो। मेरे प्रभु श्रीराम का नाम भज लो। हाथ दिए है तो इनके धर्म का बखान करो, नहीं तो चंपा की डालियां समझ। पेट दिया है तो व्रत भी रख लो, नहीं तो अन्न की कोठी समझो। मेरे प्रभु श्रीराम का नाम भज लो। पैर दिए हैं तो तीर्थ कर लो, नहीं तो किसी मंदिर के खंभे को समझो। मेरे प्रभु श्रीराम का नाम भज लो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मालवी बोली, परंपरा और संस्कृति में राम की महिमा रची–बसी है। यहां के राम जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं।